महात्मा गाँधी जी की जयंती पर संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में अध्यक्ष महोदय द्वारा सम्बोधन

---

1. आज राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी और पूर्व प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जन्म जयंती के पावन अवसर पर संसद भवन के इस ऐतिहासिक केंद्रीय कक्ष में उपस्थित होना अपने आप में गौरव की बात है।

2. 1947 की स्वतंत्रता दिवस की मध्यरात्रि को इसी ऐतिहासिक केंद्रीय कक्ष से हमारे देश की स्वतंत्रता का उद्घोष हुआ था। इसी ऐतिहासिक कक्ष में भारत के संविधान की रचना की गई थी और उसे अंगीकार किया गया था।

3. ये बहुत सुखद है कि देश की नई पीढ़ी आज उसी ऐतिहासिक कक्ष में अपने उन मनीषियों का स्मरण कर रही है, जिन्होंने स्वतंत्र भारत को एक नई दिशा दी और लोकतंत्र के माध्यम से लोगों के जीवन में सामाजिक आर्थिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया।

4. गाँधी जी और शास्त्री जी ऐसे आदर्श व्यक्तित्व थे, जिन्होंने सार्वजनिक जीवन में शुचिता, सरलता और सादगी के मानक स्थापित किए।

5. अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलनों के नेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने 20वीं सदी में विश्व के 2 महान हस्तियों के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया है। आइंस्टीन के विचार ने भौतिक दुनिया की समझ को बदल दिया था, तो गाँधी के विचार ने राजनीतिक दुनिया की समझ का कायापलट कर दिया था।

6. युवा साथियों, आप विचार कीजिए कि उस समय जब दुनिया में विश्वयुद्ध चल रहे थे, जब दुनिया परमाणु हथियार बना रही थी। उस दौर में महात्मा गाँधी देशवासियों को एकजुट कर प्रेम, सत्य और अहिंसा के अपने अनोखे शस्त्रों से दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त का मुकाबला कर रहे थे।

7. महात्मा गाँधी के बारे में अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि आने वाली पीढ़ियाँ मुश्किल से ही यकीन कर पाएंगी कि हाड़-माँस का एक ऐसा व्यक्ति भी इस दुनिया में था।

8. मैं समझता हूँ कि आज देश के हर नागरिक को अपने महापुरुषों के बारे में जानना चाहिए। युवाओं को उन्हें पढ़ना चाहिए, उन्हें समझना चाहिए। गाँधी जी के बारे में जितना मैंने पढ़ा, मुझे लगता है कि एक नेता के तौर पर उनकी सबसे खास बात थी कि वो लोगों को बड़ी सहजता से अपने से जोड़ लेते थे।

9. गाँधी जी वास्तविक जन नेता थे। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन से पूरे देश को जोड़ दिया था। लाखों किसानों, मजदूरों, महिलाओं को उन्होंने हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बनाया। उनकी प्रेरणा से, उनके आह्वान पर उस समय कई वकीलों ने अपनी वकालत छोड़ दी, विद्यार्थियों ने आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लिया। और लाखों गरीब – असहाय जनता, जो विदेशी शासन में मजबूर थी, उन्हें गाँधी जी के नेतृत्व से मजबूती मिली।

10. मानवता के उपासक और शांति के दूत महात्मा गाँधी जी ने अपने कार्यों से देश ही नहीं बल्कि दुनियाभर में लोगों को प्रेरित किया। अपनी युवावस्था में उन्होंने करीब 20 साल दक्षिण अफ्रीका में अन्याय के विरोध में वहाँ की जनता को जागरुक किया। नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग जूनियर, दलाई लामा, मिखाइल गोर्बाचोव, आंग सान सू की जैसे कई वैश्विक नेताओं ने उनसे प्रेरणा ली।

11. शास्त्री जी भी गाँधी जी के बड़े अनुयायी थे। असहयोग आंदोलन हो या दांडी मार्च; लाल बहादुर शास्त्री जी ने अपने पूर्ण समर्पण के साथ देश की आज़ादी की लड़ाई में भागीदारी की। आज़ादी के संघर्ष में शास्त्री जी सात वर्षों तक ब्रिटिश जेलों में भी रहे, लेकिन वो देश के लिए समर्पण ही था, जिसने उन्हें कभी हिम्मत नहीं हारने दी।

12. आज जब आप युवा हमारे इन राष्ट्र नायकों का स्मरण कर रहे हो, तो ये आपका कर्तव्य बनाता है कि आप इनके बारे में पढ़ें, इन्हें गहराई से जानें।

13. महात्मा गाँधी जी, शास्त्री जी और हमारे जितने भी महापुरुष हुए हैं, सभी के जीवन में आप देखेंगे कि उन्होंने कठिन परिश्रम किया और संघर्ष किया।

14. आज दुनिया के कई देशों में महात्मा गाँधी की प्रतिमाएं लगी हैं, पूरी दुनिया में उन्हें जाना जाता है। मगर जब आप पढ़ेंगे तो जानेंगे कि पूरे जीवन में कई बार गाँधी जी ने दमन और अन्याय का सामना किया। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन की फर्स्ट क्लास कोच में सफर करने के कारण उन्हें सर्द रात में ट्रेन से अपमान कर उतार दिया गया था। अफ्रीका में और भारत में भी कई बार उन्हें विरोध झेलना पड़ा था। आप शास्त्री जी का जीवन पढिए कि किस तरह संसाधनों के अभाव में उन्होंने अपना जीवन जिया और देश के प्रधान मंत्री पद तक पहुँचे।

15. यह लाल बहादुर शास्त्री जी की ईमानदारी और उच्च आदर्श थे, कि एक रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था।

16. महात्मा गाँधी जी का दर्शन तो इतना विशाल है कि उन्होंने सिर्फ राजनीति पर ही बात नहीं की, बल्कि जीवन के लगभग हर क्षेत्र पर उन्होंने खुलकर विमर्श किया और हमें प्रेरणा दी। गाँधी जी आज भी जीवन के हर क्षेत्र में प्रासंगिक हैं।

17. ट्रस्टीशिप का उनका एक विचार है, जो कहता है कि जो पूंजीपति/धनवान लोग हैं, वो अपने आपको ट्रस्टी मानकर समाज के कल्याण और वंचितों के उत्थान के लिए कार्य करें।

18. पश्चिम के विचारकों ने 'सरवाइवल ऑफ द फिटेस्ट' की बात कही; मगर गाँधी जी ने सर्वोदय का विचार दिया। सर्वोदय यानी सभी का उत्थान। समाज के अंतिम वंचित व्यक्ति के अधिकारों की भी रक्षा हो और उसका भी कल्याण सुनिश्चित हो- ऐसी महान धारणा महात्मा गाँधी जी ने दुनिया को दी।

19. पर्यावरण संरक्षण को लेकर गाँधी जी का विचार बड़ा अतुलनीय है। आज हम देख रहे हैं कि दुनिया भर में तेजी से आगे बढ़ने की होड़ मची है। और इस होड़ में मनुष्य प्रकृति को भारी नुकसान पहुँचा रहा है।

20. लेकिन भारत आज भी अपनी परंपरा और संस्कृति पर चलता है। हम पर्यावरण बचाने के लिए एक प्रतिबद्ध राष्ट्र हैं। दुनिया की 17

प्रतिशत आबादी हमारे देश में रहती है, लेकिन दुनिया के कुल कार्बन उत्सर्जन में हमारी हिस्सेदारी केवल 5 प्रतिशत है।

21. हम प्रकृति और पर्यावरण के लिए गाँधी जी के दर्शन को मानते हैं, जब उन्होंने कहा था कि अनमोल धरती के पास इतने संसाधन तो है कि वह मनुष्यों की ज़रूरतों को पूरी कर सकती है, लेकिन धरती की इतनी क्षमता नहीं कि यह मनुष्यों के लालच की पूर्ति कर सके।

22. नैतिकता गाँधी जी के दर्शन के मूल में थी। आज हम देखते हैं कि व्यक्ति कई बार अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किसी भी तरह के प्रयास कर लेता है, उसमें सही-गलत नहीं देखता। इस विषय पर गाँधी जी ने कहा था कि साध्य के साथ-साथ साधन की पवित्रता भी आवश्यक है।

23. आज के दिन आप सब विद्यार्थी, जो यहाँ केन्द्रीय कक्ष में बैठे हो; आप सभी प्रतिभाशाली हैं। इसलिए मैं समझता हूँ कि आप इस बात की गंभीरता को समझते हैं कि गाँधी जी और शास्त्री जी को नमन करने – आज उन्हें याद करने का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम अपने सोशल मीडिया पर उनकी तस्वीर लगा लें, उनकी पोस्ट कर दें। बल्कि हम अपने महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन जीते हैं, तब इन महापुरुषों को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

24. हम स्वदेशी का प्रचार करें और आत्मनिर्भर भारत बनाने में अपनी भूमिका निभाएं। जब खरीददारी करें, तो अपने देश में बना प्रोडक्ट खरीदें। अपने घर और आसपास साफ़-सफाई रखें और देश को स्वच्छ बनाने में अपना योगदान दें।

25. अभी इसी साल भारत की आज़ादी को 75 वर्ष पूरे हुए हैं। स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने देशवासियों से पाँच प्रण लेने की अपील की है।

पहला प्रण है - विकसित भारत का लक्ष्य

हमारा दूसरा प्रण है - गुलामी के हर अंश से मुक्ति

तीसरा प्रण है - अपनी विरासत पर गर्व करना

चौथा प्रण – देशवासियों की एकता एवं एकजुटता

और हमारा पाँचवां प्रण है- नागरिकों में कर्तव्य की भावना का होना।

26. प्रिय युवा मित्रों, आपको पूरे समर्पण के साथ इन पाँच संकल्पों, इन पाँच प्रण का पालन करना है। आप यकीन मानिए, यह देश के लिए आपका महत्वपूर्ण योगदान होगा। हमारे महापुरुषों का जीवन भी हमें इन पाँच प्रण के पालन की सीख देता है।

27. गुलामी के हर अंश से मुक्ति के लिए हमारे राष्ट्र नायकों ने आजीवन काम किया। इसके लिए महात्मा गाँधी जी ने चरखा काता, सूत तैयार किया और उस सूत की खादी वो शरीर पर पहनते थे।

28. ब्रिटेन में जब बंकिंघम पैलेस में उन्हें आमंत्रित किया गया, तब भी वहाँ उन्होंने पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण नहीं किया; बल्कि एक सामान्य भारतीय किसान की वेशभूषा, अपने खादी वस्त्रों में वहाँ गए।

29. साथियों, जब तक हम अपनी विरासत पर गर्व नहीं करेंगे, अपनी संस्कृति-अपनी परंपरा अपने इतिहास से प्रेरणा नहीं लेंगे, तब तक हम आगे बढ़ने के लिए अपने आपको प्रेरित और प्रोत्साहित नहीं कर पाएंगे।

30. जीवन के किसी भी क्षेत्र में आप आगे बढ़ें, अपने करियर में आप चाहे शिक्षा में जाए, मेडिकल में जाए, इंजिनियर बने, प्रशासनिक अधिकारी बने, खिलाड़ी बने, समाज सेवा में जाए या जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, आप हमेशा अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि और उन्नति के साथ-साथ देश की प्रगति मैं योगदान को अपना लक्ष्य बनाएं। अपने देश को हमें आगे ले जाना है, यह सोच हमेशा आपके अंदर होनी चहिए।

31. अपने महापुरुषों का जीवन संदेश आप अपने जीवन में अपनाएं, इसी मैसेज के साथ आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं।

32. मैं एक बार पुनः राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी को नमन करता हूं और आप सभी नौजवानों को शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद। जय हिन्द।